Bihar Board Class 6 Hindi Notes Chapter 9 बाल-लीला

बाल-लीला Summary in Hindi

पाठ का सार-संक्षेप

सूरदास एक सन्त कवि थे और श्रीकृष्ण उनके आराध्य कहते हैं वे जन्म से अन्धे थे पर उनके हृदय में श्रीकृष्ण की मनोहारी छवि सदा बसती थी। श्रीकृष्ण की लीला का अत्यन्त विस्तार से उन्होंने अपने पदों (काव्य रचनाओं) में वर्णन किया है। पर श्रीकृष्ण के बालरूप पर वे मोहित थे और बाल-लीला संबंधी सूरदास के पदों में बाल-लीला, बाल-क्रीड़ा का अत्यन्त सजीव चित्रण मिलता है। इस पाठ्य पुस्तक में बाल-लीला संबंधी पद संकलित हैं जिनका भावार्थ नीचे दिया जा रहा है। ये पद ब्रजभाषा में लिखे गये हैं और ब्रजभाषा की मिठास का दर्शन अग्रलिखित पदों में मिलता है –

भावार्थ – बाल कन्हैया थोड़े बड़े हो जाते हैं और अपने संगी-साथी, हमजोलियों के साथ खेलने लगते हैं। आस-पड़ोस की ग्वाल-बालायें, यशोदा मैया के पास यह उलाहना लेकर आती हैं कि तेरे पुत्र ने मेरे माखन चुराकर खा लिये। यशोदा मैया के मन को ठेस पहुँचती है। वह तिलमिला उठती है और बाल कन्हैया के इस आचरण पर क्षोभ प्रकट करती है। वह कन्हैया को डाँट बताती है और छोटा-सा कन्हैया – माँ को अपनी तुतली बोली में सफाई देता है- "मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।" मैया मैंने माखन चुराकर नहीं खाये। अब देखो ना माँ – तू तो भोर होते ही गौओं के साथ जंगल (मधुवन) भेज देती हो। मैं तो सुबह से शाम तक उन गौंओं के पीछे भटकता रहता हूँ और फिर शाम ढलने पर ही वापस आता हूँ। फिर देखो ना माँ, मेरे हाथ तो छोटे-छोटे हैं – फिर छींके तक मेरी बाँह कैसे पहुँच जायेंगे। छींका तो ऊँचाई पर लटका है। ये ग्वाल-बाल मुझसे वैर (भेद-भाव, दुश्मनी) रखते हैं। इन्होंने मक्खन स्वयं चुराकर खाये और जबरदस्ती मेरे मुँह में लपेट दिया ताकि मैं ही पकड़ा जाऊँ। और फिर माँ तू भी कितनी भोली-भाली है कि इनकी बातों को तुमने सच मान लिया। मुझे तो अब लगता है कि तुम्हारे मन में भी कुछ खोट (भेद) पैदा हो गया है क्योंकि मैं तेरा बेटा नहीं हूँ। तू जानती है कि मेरा जन्म देने वाली माँ तो कोई और है।

फिर कन्हैया तमक कर, रूष्ट होकर यशोदा मैया को कहते हैं – तु
अपनी यह लकुटी (छोटी छड़ी) और काली कम्बल ले ले। तूने माँ, मुझे
बहुत सताया। आगे से मैं तेरी कोई बात नहीं मानूँगा।

कन्हैया के इस बाल सुलभ कौतुक से माँ यशोदा का मन पसीज जाता है और वह कन्हैया को गोद में उठाकर अपने गले में लगा लेती है।

https://www.evidyarthi.in/